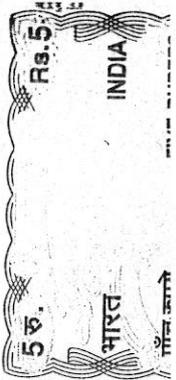
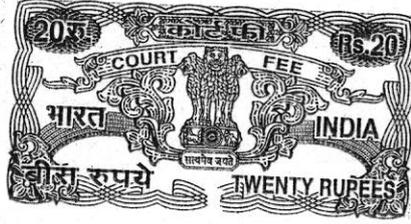


(4)



न्यायालय राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर
निग-3583-II-16

प्रकरण क्रमांक / 2016 पुनरीक्षण

छोटेलाल गर्ग पिता तिलकधारीराम
निवासी ग्राम कबरा, तहसील-सिरमौर
जिला-रीवा म.प्र.

विरुद्ध

देवेन्द्र प्रसाद गर्ग पिता छोटेलाल गर्ग
निवासी ग्राम खैर, तहसील-सिरमौर
जिला-रीवा म.प्र.

सुकरा बलपुलक, आम्हो

दिनांक 13-10-16 को

प्रस्तुत

13-10-16

256
13-10-16

नायब तहसीलदार, तहसील-सिरमौर वृत्त वैकुण्ठपुर जिला-रीवा द्वारा प्रकरण क्रमांक 39/ए-6/2013-14 में पारित आदेश दिनांक 07-10-2016 के विरुद्ध पुनरीक्षण अंतर्गत धारा-50 म.प्र. सू-राजस्व संहिता 1959.

महोदय,

आवेदक निम्नलिखित आधारों पर यह पुनरीक्षण आवेदन प्रस्तुत करता है-

1. यह कि, तहसील न्यायालय की कार्यवाही एवं आदेश अवैध, अनुचित एवं मनमाने होकर निरस्त किये जाने योग्य है.
2. यह कि, प्रकरण में विवादित भूमि पुश्तैनी भूमि है। अनावेदक द्वारा तहसील न्यायालय के समक्ष नामांतरण हेतु प्रस्तुत आवेदन पत्र पर तहसील न्यायालय द्वारा जिस प्रकार से कार्यवाही की जा रही है वह विधि के प्रावधानों के पूर्णतः विपरीत है.
3. यह कि, तहसील न्यायालय के समक्ष आवेदक द्वारा अपनी साक्ष्य प्रस्तुत करने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया था जिसे अस्वीकार किया जाने पर आवेदक द्वारा माननीय राजस्व मण्डल के समक्ष तक कार्यवाही की गयी जिस पर राजस्व मण्डल द्वारा आवेदक के साक्ष्य लेने के निर्देश दिये गये। राजस्व मण्डल से निर्णय होने के पश्चात आवेदक द्वारा तहसील न्यायालय के समक्ष अपनी साक्ष्य के प्रमाण स्वरूप लेखी साक्ष्य प्रस्तुत करते हुये उन साक्ष्यों को प्रमाणित करने हेतु विशेषज्ञों से जांच कराने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया.
4. यह कि, तहसील न्यायालय द्वारा उक्त आवेदन पत्र पर कोई निर्णय न लेते हुये तथा उन दस्तावेजों को अभिलेख पर न लेते हुये मनमाने ढंग से कार्यवाही की जा रही है जिससे आवेदक को अपने अधिकारों से वंचित होना पड़ रहा है आवेदक लगातार तहसील न्यायालय में उपस्थित होता रहा है किन्तु न्यायालय में येन केन प्रकारण आवेदक की साक्ष्य नहीं ली

SB Depurkar
13-10-16

Ru

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

आदेश पृष्ठ
भाग - अ

प्रकरण क्रमांक निगरानी 3583-दो/2016

जिला रीवा

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही अथवा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
०३-०१-२०१७	<p>आवेदक अभिभाषक श्री एस०के० वाजपेयी एवं अनावेदक अभिभाषक श्री के०के० द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया।</p> <p>२/ अधीनस्थ न्यायालय के आदेश की सत्यापित प्रति के अवलोकन से स्पष्ट है कि इस न्यायालय के प्रकरण क्रमांक २९१०-दो/२०१५ में पारित आदेश दिनांक १५-१०-२०१५ के द्वारा आवेदक को साक्ष्य का अवसर देने के उपरांत निराकरण करने के आदेश दिये गये थे जिसके पालन में तहसीलदार द्वारा आवेदक को साक्ष्य के कई अवसर प्रदान किये। तहसीलदार ने आवेदक को दिनांक ११-८-२०१६, ०२-९-१६, १४-९-१६, २३-९-१६, २९-९-१६, ०६-१०-१६ एवं ७-१०-१६ को साक्ष्य प्रस्तुत करने के अवसर दिये गये परन्तु आवेदक द्वारा साक्ष्य प्रस्तुत न करते हुये और अवसर चाहा। विचाराधीन आदेश दिनांक ७-१०-१६ को भी आवेदक द्वारा स्वास्थ्य खराब होने से साक्ष्य हेतु अवसर चाहा है, परन्तु तहसीलदार द्वारा आवेदक की ओर से अस्वस्था के संबंध में किसी चिकित्सक का प्रमाण पत्र प्रस्तुत नहीं करने एवं पूर्व में कई अवसर साक्ष्य हेतु प्रस्तुत नहीं करने के कारण आवेदक का साक्ष्य का अवसर समाप्त करने के आदेश दिये हैं। तहसीलदार द्वारा पारित आदेश में किसी प्रकार की अवैधानिकता प्रकट नहीं होती है। दर्शित परिस्थितियों में यह निगरानी प्रथमदृष्टया आधारहीन होने से निरस्त की जाती है। पक्षकार सूचित हों। प्रकरण दाखिल रिकार्ड हो प्रकरण अग्रिम कार्यवाही हेतु तह० सिरमौर की ओर भेजा जाये।</p> <p style="text-align: right;">(एस. एस. अली) सदस्य</p>	